संदर्भ ग्रंथ सूची

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

संदर्भ ग्रंथ सूची

अ. नं.	लेखक का नाम	ग्रंथ का नाम	प्रकाशन एवं संस्करण
(1)	आहूजा, राम	भारतीय सामाजिक व्यवस्था	रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर एवं लखनऊ, प्रथम संस्करण 1995
(2)	गुप्ता, मंजुला	समाज और व्यक्ति का द्वंद्व	सूर्य प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1986
(3)	गोकाकर, सुधाकर	मार्क्सवाद और कहानी	विद्या विहार कानपुर, 3, प्रथम संस्करण 1979
(4)	गौतम, डॉ.वीणा	आधुनिक हिंदी नाटकों में मध्यवर्गीय चेतना	संजीवन प्रकाशन, दिल्ली - 2 प्रथम संस्करण 1995
(5)	टंडन, प्रताप नारायण	हिंदी उपन्यास में वर्गभावना	लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ प्रथम संस्करण 1956
(6)	बांदिवडेकर, डॉ.चंद्रकांत	हिंदी और मराठी के सामाजिक उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन	कृष्णा ब्रदर्स, अजमेर, प्रथम संस्करण 1969
(7)	बांदिवडेकर, डॉ.चंद्रकांत	गोविंद मिश्र सृजन के आयाम	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली - 2, प्रथम संस्करण 1990
(8)	भांडारकर, डॉ.पु.ल. वैद्य, प्रा. नी.स.	समाजशास्त्रीय सिद्धांत	विद्या प्रकाशन नागपुर, प्रथम संस्करण 1979
(9)	शंकर, डॉ.विमल	हिंदी के आँचलिक उपन्यास सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ	प्रेरणा प्रकाशन, मुरादाबाद, प्रथम संस्करण 1985

SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

अ. नं.	लेखक का नाम	ग्रंथ का नाम	प्रकाशन एवं संस्करण

आधार ग्रंथ-सूची

(1)	मिश्र, गोविंद	वह अपना चेहरा	राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1969
(2)	मिश्र, गोविंद	लाल पीली जमीन	राजकमल पेपर बैक्स, प्रथम संस्करण 1976
(3)	मिश्र, गोविंद	तुम्हारी रोशनी में	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1985
(4)	मिश्र, गोविंद	पाँच आँगनोवाला घर	राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1995

शब्द कोश :-

(1)	श्री नवल जी	नालंदा विशाल शब्द सागर	आदिश बुक डेपो दिल्ली, प्रथम 1988
(2)	वर्मा, रामचंद्र	हिंदी मानक कोश खंड - 5	हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, प्रथम संस्करण 1966

परिशिष्ट

[illegible]

(1) पारिवारिक ... विशेषकर आर्थिक बहुत ही दयनीय थी। ... पिता की कोई नौकरी नहीं थी। इसलिए उन्होंने ... मगौड़ों की दुकान खोल ली थी, लेकिन ... अतर्रा के स्कूल में अध्यापिका हो गई थीं। उस जमाने में नौकरी करने वाली महिला को अच्छी नज़र से नहीं देखा जाता था। उस इलाके में उस समय शायद वह अकेली महिला थीं जो नौकरी पर निकली थीं। अतर्रा बाँदा जिले का छोटा ~~कस्बा~~ था और बहुत ही पिछड़ा इलाका था।

(2) जन्म – 1 अगस्त 1939 को अतर्रा (बाँदा) उ० प्र० में। माता – श्रीमती सुमित्रादेवी मिश्रा, पिता श्री माधव प्रसाद मिश्र। माता लोअर मिडिल पास ... जो उन्होंने विवाह के बाद किया। तेरह वर्ष की अवस्था में उनका विवाह हो गया था। लोअर मिडिल करने के बाद वे पढ़ाने लगी थीं। पिता ... में संस्कृत के विद्यार्थी रहे थे, वहीं ... करते थे। ... की प्रेरणा करने के बाद ... उनके पास कोई शिक्षा नहीं थी। इसलिए ... सामने ... नहीं कर पाते। ~~[illegible]~~ गोविन्द मिश्र अपने नाना जी की दुलारी सन्तान थे। उस समय पिता मंगौड़ों की दुकान चलाया करते थे।

(3) जाति वंश पूर्वज – जाति ब्राह्मण। पूर्वज – ... स्व. श्री गंगाराम, जो पहले पहाड़ी क्षेत्र में ... गाँव (जिला हमीरपुर उ० प्र०) में ~~[illegible]~~ खेती करते थे। नाना बाँदा में ... का काम करते थे। दादी का बहुत पहले स्वर्गवास हो गया ... [illegible] ... की कमाई।

(4) जन्मस्थान की भौगोलिक, सामाजिक स्थिति — अतर्रा बाँदा जिला उत्तर प्रदेश की एक तहसील था। बहुत ही पिछड़ा हुआ इलाका। ... के लिए प्रसिद्ध। ... [illegible]।

(5) पारिवारिक परिवेश, स्थान एवं वातावरण — ... माता सुमित्रादेवी सरकारी ... के स्कूल में पढ़ाने वाली अध्यापिका थीं। ... की आठवें दर्जे तक की शिक्षा गंगा सिंह हायर स्कूल ... में हुई। ... का एक स्कूल ..., ... बड़े ... थे, बच्चों को बहुत मानते थे। ... के बाद

जिला हमीरपुर में शामिल हो गयी।

(6) किशोरावस्था में पड़नेवाले प्रभाव — रियासतें खत्म होने के बाद पिता का तबादला चरखारी स्कूल से बाँदा में हो गया, यहाँ बच्चों को अच्छी शिक्षा की सुविधा नहीं थी। इसलिए माता के साथ वे बाँदा में चली आयीं, जहाँ उन्होंने प्राइवेट स्कूल से अध्यापन शुरू किया। बाद में वे म्युनिसिपल स्कूल में चली गयीं और आजीवन बाँदा में ही पढ़ाती रहीं। गोविन्द मिश्र ने 6 से 12 तक की पढ़ाई बाँदा के डी.ए.वी. स्कूल फिर गवर्नमेंट इण्टर कॉलेज में की। हाईस्कूल और इण्टर दोनों में वे अपने जिले में प्रथम रहे। किशोरावस्था में उन पर पड़ने वाले प्रभावों में स्कूल के अध्यापक जिनमें श्री श्यामामोहन त्रिवेदी, श्री देवेन्द्रनाथ खरे, रामराज माथुर साहब आदि प्रमुख थे। सहपाठी और सहपाठिका श्री रमेशचन्द्र गुप्ता उर्फ 'घनश्याम' और लता उर्फ मन्नो लेखक के अन्तरंग मित्र थे। इन दोनों के स्वभाव की मिठास, उनके सहज प्रेम ने लेखक के किशोर मन पर चरखारी में मिली कर्कशता धो दी। चरखारी में सामाजिक वातावरण, विशेषकर खटिया मोहल्ले का जहाँ वे रहते थे, बहुत ही कर्कश और हिंसापूर्ण था। बाँदा आकर किशोर मन थोड़ा सन्तुलित हुआ। जीवन में मिठास आई। जीवन की पहली कहानियाँ 14 वर्ष की उम्र में बाँदा में ही लिखी गयीं।

(7) उच्च अध्ययन — के लिए गोविन्द मिश्र इलाहाबाद विश्वविद्यालय गये जहाँ सर सुन्दर लाल हॉस्टल में रहकर 1954 से 1959 के दौरान लेखक ने बी.ए. एम.ए. किया। बी.ए. में विषय — अंग्रेजी साहित्य, मध्यकालीन इतिहास और संस्कृत थे, एम.ए. में अंग्रेजी साहित्य।

(8) साहित्य के प्रति अनुराग — जो बाँदा में प्रकट हो गया था यहाँ आकर और विकसित हुआ। फिराक गोरखपुरी को अपने मित्रों के साथ नजदीक से देखने और सुनने का मौका मिला। [illegible] की पत्रिकाओं में रचनाएं छपीं।

(9) प्राध्यापक — एम.ए. में यूनिवर्सिटी मेरिट लिस्ट में चौथा स्थान मिला और पास करने के ही वर्ष (1959) में सेंट एंड्रूज कालेज गोरखपुर में प्राध्यापक हो गये। 1959 जुलाई से मार्च तक वहाँ रहे, इसके बाद अतर्रा डिग्री कॉलेज में हेड के पद पर आ गये। गोरखपुर में नौकरी के अलावा ध्यान आई.ए.एस. इम्तहान की तैयारी में ही लगा रहा। यहाँ बैडमिंटन खेलना शुरू किया।

(10) गार्हस्थ्य जीवन — 1961 की मई में जब कि गोविन्द बेकार थे, उनकी माँ ने उनका विवाह टीकमगढ़ के श्री प्रेमनारायण दुबे की दुलारी कन्या शकुन्तला से कर दिया। वैवाहिक जीवन में चार सन्तानों की प्राप्ति हुई जिनमें एक पुत्री छः माह में और एक पुत्र डेढ़ साल की आयु में भगवान को प्यारे हो गये। इनका गोविन्द मिश्र के मन पर विषादपूर्ण प्रभाव पड़ा। चरखारी का वातावरण 'लाल पीली जमीन' उपन्यास में, पुत्री [illegible] देखना का प्रकरण 'लाजिम'

[illegible] से [illegible] 'राजनीति' कहानी से [illegible] हुआ है।

(11) प्रशासनिक सेवा – [illegible] का कोई [illegible] कारण नहीं था। [illegible] इलाहाबाद में अधिकतर विद्यार्थी [illegible] नौकरियों के लिए कम्पटीशन में बैठते थे। 1960 के [illegible] में [illegible] [illegible] हैं, और उसी वर्ष चुन लिये गये [illegible] के प्रयास से।

(12) प्रथम नियुक्ति [illegible] में हुई। [illegible] [illegible] अधिकारी के [illegible] के अनुभव 'वह/अपना-चोहरा' उपन्यास और [illegible] कहानियों में व्यक्त हुए हैं।

13. साहित्यकारों से सम्पर्क – 1966 में दिल्ली स्थानान्तरण हुआ। [illegible] जी, जैनेन्द्र जी व दिल्ली में [illegible] वाले [illegible] साहित्यकारों से परिचय हुआ। उनके [illegible] में 'नई कहानी' और 'लोकतन्त्र' पत्रिकाओं में छपना शुरू हो गया था। [illegible] में श्री [illegible] (कवि) और श्री [illegible] से भी सम्पर्क व सौभाग्य मिला। राजनीतिज्ञों में किसी [illegible] से कोई [illegible] सम्पर्क नहीं हुआ।

14 [illegible] जीवन ने भी [illegible] [illegible] – [illegible] [illegible] और [illegible] ने [illegible], [illegible] के मोहभंग ने [illegible]। [illegible] कि [illegible] देने के लिए [illegible] है, [illegible] को प्रकट करने के लिए [illegible] इतना दबाव होता था। जीवन को, [illegible] को [illegible] है, [illegible] परिवेश, उसके [illegible] को [illegible] है। [illegible] लिए लिखता था।

15. साहित्यकारों का [illegible] – [illegible] साहित्यकारों का [illegible], [illegible] के [illegible] में जहाँ भी [illegible]। किसी वाद या आन्दोलन से कभी नहीं जुड़ा क्योंकि ऐसा [illegible] [illegible] लेखक को अपने 'निज' के [illegible], वही [illegible] का [illegible] है। आन्दोलन [illegible] [illegible] नहीं है। [illegible] जीता हूँ लिखता। [illegible] साहित्यकारों से सम्पर्क [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] नहीं थे – जैनेन्द्र, अज्ञेय, रेणु, [illegible] जी, विष्णु प्रभाकर, निर्मल वर्मा, [illegible], [illegible] जोशी, मन्नू भंडारी, [illegible] आदि।

16 [illegible] – [illegible] पहले [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] में [illegible] हैं। [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible], [illegible] स्वीकार करना – यह जीवन में [illegible] [illegible] [illegible] है।